[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3428

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

संगीत में नवाचार फ्यूज़न म्यूजिक

शिल्पा मसूरकर
शोधार्थी
दे. अ. वि. वि., इन्दौर

भारत देश कला व संस्कृति का प्रतीक माना जाता है। भारतीय संगीत हमारे भारत की अमूल्य धरोहर के रूप में अति प्राचीन काल से ही सर्वोच्च स्थान पर विद्यमान है। सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही संगीत भी अस्तित्व में आया होगा, ऐसा माना गया है, परंतु देखा जाये तो प्रकृति के रोम–रोम में ही संगीत बसता है, नदियों की बहती धारा, कल–कल की ध्वनि, हवा की सन्–सन् ध्वनि, पत्तों से टकराती हवा की ध्वनि व पत्तों पर गिरती बारिश के बूंदों के टप्–टप् की ध्वनि, पक्षियों की चहचहाट आदि में संगीत को देखा, सुना, समझा व महसूस भी किया जा सकता है। संगीत ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का एकमात्र साधन है।

भारत में पिछले कई वर्षों से सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक रूप से निरंतर परिवर्तन होते आये हैं जिसका प्रभाव निश्चित ही कला व संस्कृति पर भी पड़ता आया है। संगीत तो वैदिक काल से ही मानव सभ्यता का अंग रहा है, तो इसमें भी परिवर्तन आना अपरिहार्य है।

भारतीय संगीत के इतिहास के अनुसार प्रत्येक काल में चाहे बौद्ध काल या जैन काल या रामायण व महाभारत काल या पौराणिक काल या गुप्त काल या मौर्य काल या राजपूत काल या मुगल काल हो, सभी कालों में संगीत की स्थिति व उसमें कई बदलाव दिखाई देते हैं। चूंकि प्रत्येक काल का राजा अपनी पसंद के अनुरूप संगीत को मान देता था, इसके अलावा प्रत्येक काल में संगीत के ही अनेक ऐसे विद्वान व संगीतज्ञ हुए जिन्होंने संगीत पर कई ग्रंथ लिखे जैसे– भरतकृत नाट्यशास्त्र, शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर, मतंगकृत बृहद्देशी, अहोबलकृत संगीत पारिजात आदि। प्रत्येक ग्रंथ में संगीत के नवीन–नवीन पारिभाषिक शब्दों के साथ संगीत का स्वरूप भी बदलता रहा है। जैसे– सर्वप्रथम जाति गायन था, फिर प्रबंध गायन, ध्रुपद गायन, फिर ख्याल गायन प्रचलित हुआ। उसी तरह ग्राम राग वर्गीकरण, मेल राग वर्गीकरण, फिर राग–रागिनी पद्धति, रागांग वर्गीकरण और अंततः थाट राग वर्गीकरण पद्धति प्रचार में आई जिसका श्रेय स्व. पं. वि.ना. भातखण्डे जी को जाता है।

इस प्रकार संगीत में कई परिवर्त्तन देखने को मिलते हैं– प्रायोगिक व सैद्धांतिक दोनों ही पक्षों में। आज तो भारतीय संगीत की विविध धारायें बन गई हैं – शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, फिल्म संगीत, नाट्य संगीत, लोक संगीत, उपशास्त्रीय संगीत। इन सभी प्रकारों में शास्त्रीय संगीत मुख्य आधार है सभी प्रकारों का। शास्त्रीय संगीत को रागदारी संगीत भी कहा जाता है जिसमें ख्याल गायन होता है। शास्त्र में बंधा होने के कारण शास्त्रीय संगीत अन्य प्रकारों की अपेक्षा सूक्ष्म है व समझने में भी कठिन है। इसीलिये शास्त्रीय संगीत की महफिलों को सुनने के लिए एक विशिष्ट समुदाय ही उपस्थित होता है जो इसका जानकार है, जिसे शास्त्रीय संगीत समझ में आता हो। शास्त्रीय संगीत में भी प्रत्येक काल में जनरूचि के अनुसार कुछ बदलाव आते गये, आज के युवा कलाकार किसी एक घराने से संबंधित तो होते हैं किंतु अपने मूल घराने की गायकी में अन्य घरानों की कुछ अच्छी बातें या गुण भी ले लेते हैं जिससे उनकी गायकी में अधिक निखार आ जाता है अर्थात् अपने मूल घराने की विशेषताओं को कायम रख अन्य घरानों की कुछ विशेषताएँ या विचार या कल्पनाएँ जोड़ कर नवीन गायकी का रूप उपस्थित होता है। इस दृष्टि से आज के युग में संगीत में नवाचार करना नयी बात नहीं है। जिस प्रकार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के काल में, उनके आचार–विचार, रहन–सहन, तकनीकी प्रयोग आदि में बहुत अंतर जान पड़ता है उसी प्रकार जब शास्त्रीय संगीत भी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सिखाया जाता है तब दूसरी पीढ़ी द्वारा उसके मूल रूप में कुछ नया जोड़ा जाता है।

अब शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय व प्रचार–प्रसार में लाने के लिये अनेक माध्यम हैं जिसमें आकाशवाणी, दूरदर्शन, संगीत नाटक अकादमी व शासन द्वारा प्रति वर्ष अनेक स्थानों पर आयोजित संगीत गोष्ठियाँ, कार्यक्रम, संगीत सम्मेलन आदि। इसके अलावा महाविद्यालयीन शिक्षा प्रणाली भी शास्त्रीय संगीत को आगे बढ़ाने के लिए सहायक सिद्ध होती है किंतु इंटरनेट का माध्यम आज शास्त्रीय संगीत को प्रचार में लाने के लिए अहम् है। यहाँ तक कि आज शास्त्रीय संगीत को चिकित्सा पद्धति के रूप में भी अपनाया जा रहा है। किंतु समाज में आज भी कहीं–न–कहीं एक वर्ग ऐसा है विशेषतः उच्चकोटि का युवा वर्ग जिसे शास्त्रीय संगीत सुनना बिल्कुल भी पसंद नहीं, जिनका आकर्षण रॉक बैण्ड, जैज़ म्यूजिक, वेस्टर्न म्यूजिक की तरफ

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

अधिक है। ऐसे वर्ग को शास्त्रीय संगीत से जोड़ने के लिये शास्त्रीय संगीत को केवल एक प्रयोग के तौर पर फ्यूज़न के माध्यम से प्रस्तुत करना संगीत में नवाचार करना हो सकता है।

वैसे संगीत में, वह भी शास्त्रीय संगीत में कुछ प्रयोग करना सहज नहीं होता, वहा नवाचार कहाँ तक उचित है, यह तो उसको प्रयोग करने के बाद ही स्पष्ट हो सकता है, जरूरी नहीं कि किया गया प्रयोग श्रोताओं को पसंद ही आये क्योंकि उस प्रयोग को सफल बनाने में प्रस्तुत करने वाले कलाकारों का जितना योगदान होता है, उतना ही श्रोताओं का भी, क्योंकि उसकी सफलता का निष्कर्ष श्रोताओं व कला समीक्षकों द्वारा ही किया जाता है।

फ्यूज़न अर्थात मिश्रण। संगीत में फ्यूज़न का अर्थ है किसी एक शैली में अन्य शैली को जोड़ना या किन्हीं दो शैलियों को साथ में प्रयोग कर प्रस्तुत करना। फ्यूज़न काफी प्रकार के होते हैं जैसे–एक फ्यूज़न ऐसा होता है जो पूर्णतः पाश्चात्य शैली पर आधारित होता है, फ्यूज़न मूलतः पाश्चात्य शैली से ही उपजा हुआ है। एक फ्यूज़न ऐसा भी होता है जिसमें गायक/वादक किसी एक राग में उस राग के अलावा अन्य रागों के स्वरों का प्रयोग देशी–विदेशी वाद्यों के साथ किया जाता है। वादन में भी फ्यूज़न किया जाता है, जिसमें कुछ भारतीय शैली के वाद्यों के साथ कभी पाश्चात्य वाद्यों का तो कभी कर्नाटक शैली के वाद्यों का मिश्रण कर प्रस्तुतीकरण होता है, साथ ही गायन में भी उत्तर भारतीय संगीत के साथ कर्नाटक संगीत की जुगलबंदी भी आजकल प्रयोग के रूप में की जा रही है। आज के युग में नृत्य में भी कुछ नवीनता लाने के लिये फ्यूज़न किया जा रहा है जो कि लोगों को पसंद भी आ रहा है। ऐसे में शास्त्रीय संगीत में फ्यूज़न करना कुछ गलत नहीं है। क्योंकि शास्त्रीय संगीत मूल रूप से वहीं रहेगा चाहे कितने भी उसके साथ प्रयोग किये जाये, उसकी मौलिकता कभी नष्ट नहीं हो सकती।

आज के जमाने में प्रत्येक क्षेत्र में नवीन–नवीन प्रयोग हो रहे हैं, नवीन खोज हो रही है जिसका उद्देश्य केवल कुछ नूतन अन्वेषण करना है। उसी प्रकार केवल ऐसे युवा वर्ग को ध्यान में रखकर या उन्हें शास्त्रीय संगीत में रूचि निर्माण हो सके (आवश्यक नहीं सीखने की रूचि, सुनने की लगन भी) शास्त्रीय संगीत में मूल शास्त्रीय गायन को पाश्चात्य वाद्यों के साथ फ्यूज़न के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। फ्यूज़न से भारतीय शास्त्रीय संगीत को कतई कोई नुकसान न पहुँचे इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए शास्त्रीय संगीत में फ्यूज़न ऐसा होना चाहिये जिससे शास्त्रीय संगीत व राग में लगने वाले स्वर, स्वर–संगतियाँ, बंदिश को बिल्कुल भी हानि न हो अर्थात् कलाकार द्वारा वह राग पूर्णतः उसके शुद्ध रूप में ही श्रोताओं तक पहुँचे, बस, फ्यूज़न करने के लिए शास्त्रीय संगीत में संगति के लिये उपयोग में लाये जाने वाले अपेक्षित वाद्यों के साथ कुछ पाश्चात्य शैली के वाद्यों का उपयोग किया जाये जैसे कि– बोर्ड, ड्रम सेट, सेक्सोफोन, गिटार, कांगो आदि।

अर्थात् शास्त्रीय रागों की बंदिशो को पाश्चात्य रिदम के साथ गाना, फलस्वरूप, शास्त्रीय संगीत में फ्यूज़न का नवीन प्रयोग शास्त्रीयता के अनुरूप शुद्ध भी रहे और पाश्चात्य वाद्यों के साथ गाने पर रॉक व जैज़ प्रकार का भी रहे।

ऐसे प्रयोग से युवा वर्ग शास्त्रीय संगीत से जुड़ सकता है और एक बार शास्त्रीय संगीत के प्रति उसकी रूचि निर्माण हो जाये तब धीरे–धीरे उसे शुद्ध शास्त्रीय संगीत की तालीम दी जा सकती है। क्योंकि आज का युवा हमेशा कुछ न कुछ नवीन की तरफ अधिक जल्दी आकर्षित होता है, ऐसे में यह प्रयोग उसे शास्त्रीय संगीत की तरफ रूझान बढ़ाने में उपयोगी हो सकता है।

प्रत्येक क्षेत्र में किया गया नवीन प्रयोग एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है, शास्त्रीय संगीत के ऐसे विद्वानों व संगीतज्ञो के समक्ष ऐसा प्रयोग किया जाये जो परम्परागत रूप से शुद्ध शास्त्रीयता को मानने वाले हो, तब शास्त्रीय संगति में फ्यूज़न का प्रयोग और भी चुनौतीपूर्ण होता है, किंतु रागो के मूल–स्वरूप में बिल्कुल भी फेरबदल न करके पाश्चात्य वाद्यों के साथ सामंजस्य बनाते हुए यदि गायक/वादक ऐसा प्रयोग करे तो अनुचित नही होना चाहिए। वैसे भी प्रयोगात्मक दृष्टि से एवं आज के काल के हिसाब से ऐसा प्रयोग उचित भी है, चूँकि आज के भागते–दौड़ते जीवन में लोगों को कभी–कभी परम्परा से हटकर कुछ नया देखना व सुनना अच्छा लगता है, ऐसे में प्रयोग के तौर पर शास्त्रीय संगीत में फ्यूज़न कर एक नवीन कल्पना या विचार को श्रोताओं तक पहुँचाना गलत नहीं है, परिणामस्वरूप शास्त्रीय संगीत को सुनने व समझने वालो की संख्या में वृद्धि होती है, साथ ही युवा और विद्यार्थी भी शास्त्रीय संगीत से जुड़ते है तथा सीखने में रूचि लेते हुए दिखाई देते हैं।
शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में कई बड़े–बड़े दिग्गज कलाकार भी केवल एक प्रयोग के रूप में तथा कुछ नवीन खोज करने के लिए फ्यूज़न का आधार लेते हुए मिलते हैं, जैसे– उ. राशिद खाँ, पं. अजय पोहनकर, कौशिकी चक्रवर्ती, उ. जाकिर हुसैन साहब, तौफिक कुरैशी साहब आदि।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

देखा जाये तो ये सभी घरानेदार कलाकार हैं, तो इनके द्वारा ऐसे प्रयोग करने पर क्या ये शास्त्रीय संगीत के विरूद्ध जा रहे हैं। क्या ये शास्त्रीय संगीत में फ्यूज़न करके नवीन विधा को स्थापित करना चाहते हैं ? क्या श्रोता जितना इनके द्वारा किये गये फ्यूज़न को सुनना पसंद करते हैं, उतना शास्त्रीय संगीत को नहीं ?

उपरोक्त सभी प्रश्नों का उत्तर निश्चित ही 'नही' है। इनके द्वारा किये गये फ्यूज़न को श्रोता उतना ही पसंद करते हैं जितना उनके शास्त्रीय गायन को। न ही ऐसा प्रयोग करने से शास्त्रीय संगीत की धारा को रोका जा सकता है, न ही किसी नवीन विधा को स्थापित किया जा सकता है, क्योंकि शास्त्रीय संगीत एक नदी के समान है, जिसकी धारा प्राचीनकाल से बहती रही है, बह रही है और भविष्य में भी बहती ही रहेगी।

भारतीय संगीत की पृष्ठभूमि वैदिककाल से लेकर पुराणकाल तक तथा पुराणकाल से लेकर आधुनिककाल तक अनवरत् जो प्रयोग हुए अथवा हो रहे हैं, उन सभी का मूल उद्देश्य संगीत के जिज्ञासुओं एवं विद्यार्थियों के लिए सहज एवं सुगम पृष्ठभूमि तैयार करना रहा है।

प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से यह बताने का प्रयास है कि आज के युग के युवा वर्ग को शास्त्रीय संगीत से जोड़ने तथा कुछ नवीन खोज या कल्पना को मांडने की दृष्टि से केवल प्रयोग के रूप में शास्त्रीय संगीत जैसे परम्परागत शैली में भी फ्यूज़न कर संगीत में नवाचार हो सकता है – बशर्ते शास्त्रीय संगीत को किसी भी तरह से हानि न हो।
शोध पत्र वाचन के दौरान पॉवर पाईण्ट प्रेजेंटेशन के माध्यम से कुछ कलाकारों के विडियो या ऑडियो क्लिप्स आपके समक्ष प्रस्तुत करने कर परम्परागत शास्त्रीय संगीत में फ्यूजन म्युजिक का सम्मिश्रण कर किस प्रकार उसे अधिक आकर्षक बनाया जा सकता है, इसकी बानगी पेश करने की पुरजोर कोशिश करूंगी।